Self Respect

09-06-2014

✓बच्चे जानते हैं – शिवबाबा ज्ञान का सागर है | मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है | तो ज़रूर आत्माओं से बात करते हैं | बच्चे जानते हैं शिवबाबा पढ़ा रहे हैं | बाबा अक्षर से समझते हैं परम आत्मा को ही बाबा कहते हैं |

✓अब तुम बच्चों को यह पक्का-पक्का निश्चय करना है – परम आत्मा हम आत्माओं को ज्ञान दे रहे हैं | हम आत्मा भी शरीर द्वारा सुनती हैं और परमात्मा शरीर द्वारा सुना रहे हैं – यही घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं |

✓तुम्हारा पार्ट है नई दुनिया में प्रालब्ध भोगना |

✓आगे जिस्मानी मनुष्य मत मिलती थी, अब बाप श्रीमत दे रहे हैं | यह नई दुनिया की बिल्कुल नई नॉलेज है | तुम सब नये बन जायेंगे, इसमें मूँझने की बात ही नहीं | अनेकानेक बार तुम पुराने से नये, नये से पुराने बनते आये हो, इसलिए अच्छी रीति पुरुषार्थ करना है |

✓उसको कहा जाता है हेविन नई दुनिया, वैकुण्ठ | वहाँ के फ़िचर्स, ताज़ आदि यहाँ पर कोई बना न सकें | भल तुम देखकर भी आते हो | परन्तु यहाँ वह बना न सके | वहाँ तो नैचुरल शोभा रहती है तो अब तुम बच्चों को याद से ही पावन बनना है | याद की यात्रा बहुत-बहुत करनी है |

✓तुम बच्चों को बहुत ख़ुशी होनी चाहिए | बाप आया है तो ख़ुशी का पारा चढ़ जाना चाहिए | बाप कहते हैं मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे

- ✓ ऊँच बाप बैठ तुमको पढ़ाते हैं | दुनिया में और कोई नहीं जानते कि शिवबाबा आकर पढ़ाते हैं | वह तो सर्वव्यापी कह देते हैं | अभी तुम्हारे सामने एम ऑब्जेक्ट भी खड़ी है | सिवाए बाप के और कौन कहेगा – यह तुम्हारी एम ऑब्जेक्ट है | यह बाप ही तुम बच्चों को बतलाते हैं | तुम कथा भी सत्य नारायण की सुनते हो | वह तो जो पास्ट हो जाता है, उनकी कथायें बताते हैं कि आगे क्या-क्या हुआ | जिसको कहानी कहा जाता है | यह ऊँच ते ऊँच बाप बड़े ते बड़ी कहानी सुनाते हैं |

✓ 5 हज़ार वर्ष पहले भारत ही था, जिसमें देवतायें राज्य करते थे | यह है सच्ची-सच्ची कहानी, जो दूसरा कोई बता न सके | यह रीयल कहानी है जो चैतन्य वृक्षपति बाप बैठ समझाते हैं, जिससे तुम देवता बनते हो |

✓कहानी तो इजी है, जो गीता में लिखी है | वह कहानियाँ सुनाकर कमाई करते हैं | सुनने वालों से उन्हों की कमाई हो जाती है | यहाँ तुम्हारी भी कमाई है | दोनों कमाई चलती रहती हैं | दोनों व्यापार हैं |

- ✓तुमको आधा कल्प के लिए अमर बनाते हैं | फिर भी तुम पुनर्जन्म लेते हो | तो अब तुम बच्चों को जाना है ऊपर | मुँह उस तरफ़, टांगे इस तरफ़ करनी हैं

- ✓ तुम योगबल से इतने साहूकार बनते हो जो 21 जन्म कभी कोई से मांगने की दरकार नहीं | इतना तुम बाप से लेते हो | समझते हो बाबा तो अथाह कमाई कराते हैं, कहते हैं जो चाहो सो ले लो |

✓बाप कहते हैं मैं ऐसे मुफ़्त में थोड़ेही लूँगा जो फिर भरकर देना पड़े | बच्चों के पाई-पाई से तलाव बनता है | बाकी तो सबका मिट्टी में मिल जाना है |

✓ब्राह्मण जीवन की नेचरल नेचर द्वारा पत्थर को भी पानी बनाने वाले मास्टर प्रेम के सागर भव

✓जैसे दुनिया वाले कहते हैं कि प्यार पत्थर को भी पानी कर देता है, ऐसे आप ब्राह्मणों की नेचुरल नेचर मास्टर प्रेम का सागर है | आपके पास आत्मिक प्यार, परमात्म प्यार की ऐसी शक्ति है, जिससे भिन्न-भिन्न नेचर को परिवर्तन कर सकते हो | जैसे प्यार के सागर ने अपने प्यार स्वरूप की अनादि नेचर से आप बच्चों को अपना बना लिया | ऐसे आप भी मास्टर प्यार के सागर बन विश्व की आत्माओं को सच्चा, निःस्वार्थ आत्मिक प्यार दो तो उनकी नेचर परिवर्तन हो जायेगी |

✓अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग | रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते |